॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री राम स्तुति

गोस्वामी तुलसीदास जी — विनय पत्रिका

श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणं।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज, पद-कंजारुणं॥

कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद सुंदरं।
पट पीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरं॥

भजु दीनबंधु दिनेश, दानव-दैत्य-वंश-निकंदनं।
रघुनंद आनँदकंद, कोशलचंद, दशरथ-नंदनं॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु, उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खर-दूषणं॥

इति वदति तुलसीदास, शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं॥

॥ बोलो भगवान श्री राम की जय ॥